आधाफ़ुल के कारनामों की और भी हैं कहानियां।

सारी पढ़ डालो, एक भी कहानी छूट न जाए।

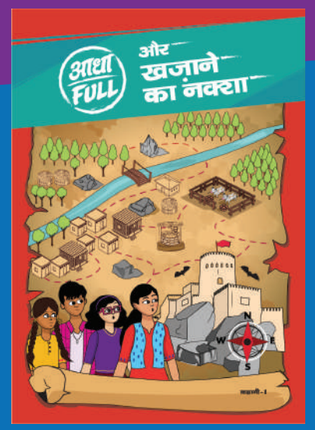

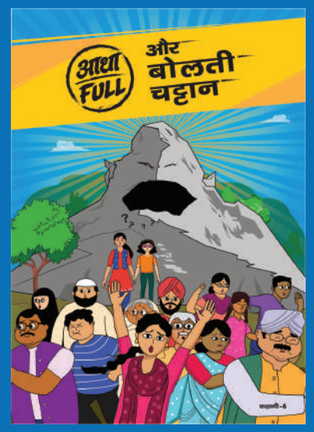

Developed and created by **BBC Media Action**
with support from **UNICEF, DOVE** and **the Centre for Appearance Research**

आधा FULL और बदलीपुर के चीते

कहानी – 2

- नाम : किट्टी
- उम्र : 16 साल
- कक्षा : ग्यारहवीं
- गुण : जोश भी है और होश भी
- *किट्टी के लिए कुछ भी इंपोसिबल नहीं

किट्टी

बदलीपुर की 'टीम' आधाफ़ुल

- नाम : अदरक
- उम्र : 15 साल
- कक्षा : सातवीं के बाद स्कूल छोड़ दिया
- गुण : एक नंबर का जुगाड़ू
- *अदरक के पास तरकीब की भरमार है।

अदरक

- नाम : तारा
- उम्र : 12 साल
- कक्षा : सातवीं
- गुण : जानकारी की चलती फिरती किताब
- *तारा कभी झूठ नहीं बोलती

तारा

तीनों बदलीपुर में रहते हैं। तीनों को जासूसी करने का बड़ा शौक है।
बदलीपुर में कुछ भी होता है तो तीनों पहुँच जाते हैं केस को सुलझाने।
इन तीनो ने मिलकर एक टीम बनाई है जिसका नाम है, आधाफ़ुल।

बदलीपुर स्कूल में एक जिला स्तर की खेल प्रतियोगिता होने वाली है।

किट्टी जमकर निशानेबाजी का अभ्यास कर रही है।

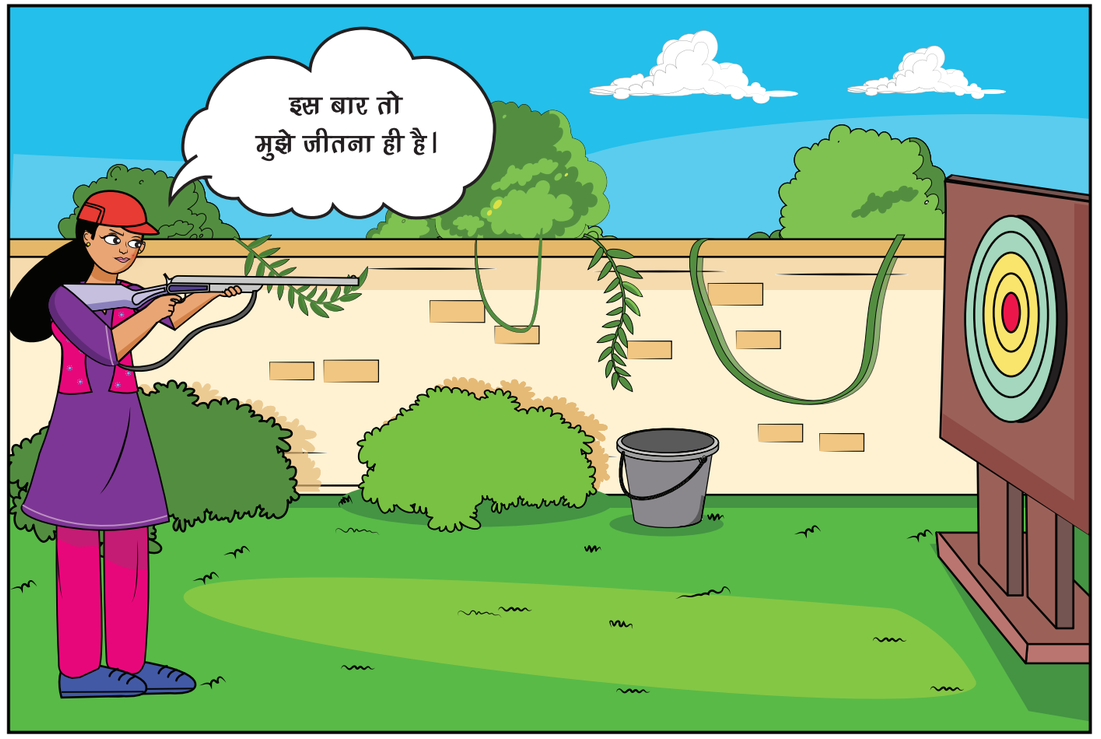

वाह किट्टी!
इस बार तो निशानेबाजी का ईनाम तुम ही जीतोगी।

पायल के होते यह आसान नहीं। हर बार की तरह, इस बार भी पायल ही जीतेगी।

अगले दिन स्कूल बॉर्ड पर खेलकूद में भाग लेने वाले प्रतियोगियों की लिस्ट लगी। लिस्ट देखकर किट्टी और तारा चौंक गए।

अरे लिस्ट में तो पायल का नाम ही नहीं है।

रेसिंग में पायल के भाई अभय का नाम भी नहीं है।

ऐसा कैसे हो सकता है! जो भाई-बहन हर साल प्रथम आते हैं वो भाग ही नहीं ले रहे।

हां, अभय तो चीते की तेज़ी से भागता है।

पायल की नजर भी तो चीते सी तेज़ है। इसीलिए दोनों भाई-बहन को सब बदलीपुर के चीते कहते हैं।

तीनों सबसे पहले पीटी टीचर के पास जाते हैं और उनसे पायल
और अभय के बारे में पूछते हैं।

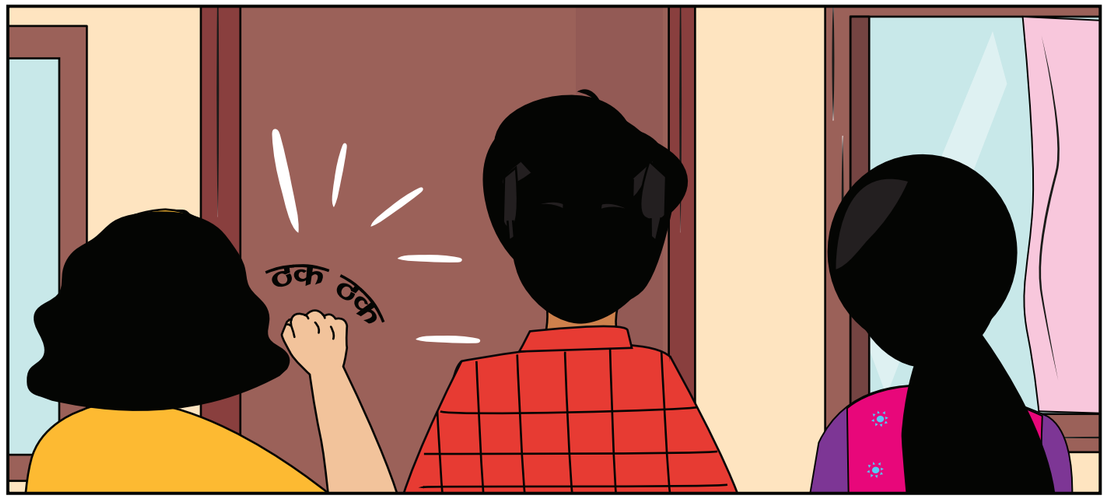

अपने रूम में हैं। दो दिन से स्कूल भी नहीं जा रहे।

तुम यहां?

बदलीपुर के चीते घर में छुपे हैं, तो किसी को तो आना पड़ेगा न देखने।

तुम दोनों प्रतियोगिता में भाग क्यों नहीं ले रहे?

बदलीपुर के चीते इस बार खेलेंगे नहीं?

गोरेपन से मिलती है सफलता
फेयरवाली क्रीम

धूप में तो काली पड़ जाउंगी।

टीवी और विज्ञापनों में तो सब मॉडल्स और स्टार्स को गोरा दिखाते हैं और वो कितनी सुंदर लगती हैं। मुझे भी उनकी तरह गोरा दिखना है। इसलिए मैं प्रतियोगिता में नहीं जाउंगी।

FAIRNESS FACE PACK

ये उबटन लगा ले, गोरी हो जाएगी, जैसे विज्ञापन में दिखाते हैं। नहीं तो तू कभी जिन्दगी में सफल नहीं हो पाएगी, न समीरा कपूर जैसी सेलिब्रिटी बन पाएगी।

और तुम अभय?

मम्मी से ज़िद करके पैसे लिए बाल सेट कराने के।

अब अगर मैं दौड़ा तो पसीना होगा और बाल खराब हो जाएंगे।

टीवी में भी तो यही आता है।

बालों में जेल लगाओ दोस्त ही दोस्त बनाओ

जेल

सारे पैसे मिट्टी में मिल जाएंगे। हीरो जैसा दिखूंगा तभी तो लड़कियां मुझसे दोस्ती करेंगी।

इसीलिए हम दोनों प्रतियोगिता में भाग नहीं ले रहे।

और स्कूल भी नहीं जा रहे।

पर पायल और अभय तुम जैसा दिखना चाह रहे हो, वही आदर्श रूप है, ऐसी सीख हमें समाज से मिलती है।

पर सांवली हो गयी तो! आस-पास के लोग पसंद नहीं करेंगे।

अगर तुम टीवी और विज्ञापनों के दबाव में आकर अपने रंग-रूप और शरीर के आकार पर ध्यान देते रहोगे तो तुम मज़े नहीं कर पाओगे। जैसे अपने दोस्तों से नहीं मिल पाओगे और ना ही किसी प्रतियोगिता में भाग ले पाओगे।

हम लोगों को उनके अनोखेपन की वजह से पसंद करते हैं ना कि उनके लुक्स यानि रंग-रूप के कारण। बताओ, तुम्हारी पसंदीदा टीचर कौन है?

रोशनी मैम

क्यों हैं फेवरेट?

क्योंकि वो मेरा ख्याल रखती हैं, हर पाठ अच्छे से समझाती हैं।

क्योंकि वो मज़ाक भी करती हैं।

हा हा हा

तो इसका मतलब हुआ कि रोशनी मैम कैसी दिखती हैं, इससे फर्क नहीं पड़ता, राइट?

तो फिर बालों की चिंता क्या करनी। जब तुम्हे लोग लुक्स के कारण नहीं, गुणों के कारण पसंद करेंगे।

और लोग क्या कहेंगे, यह सोचकर खुद को परेशान मत करो।

अभय, पायल यह बात सुन मुस्कुराते हैं। उनको आधाफुल की बात समझ आ जाती है।

अगले दिन दौड़ में अभय बालों की चिंता किये बिना चीते की तरह भागता है और सबको पीछे छोड़ देता है।

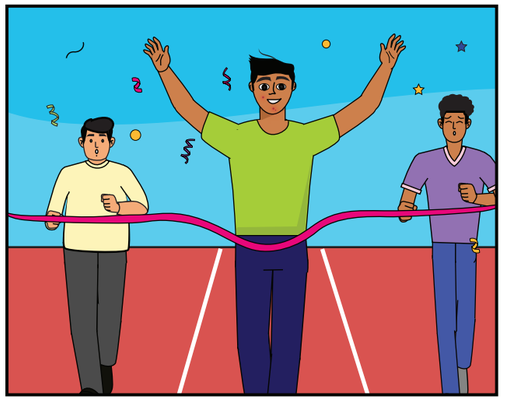

पायल का भी निशाना एकदम सही लगता है।

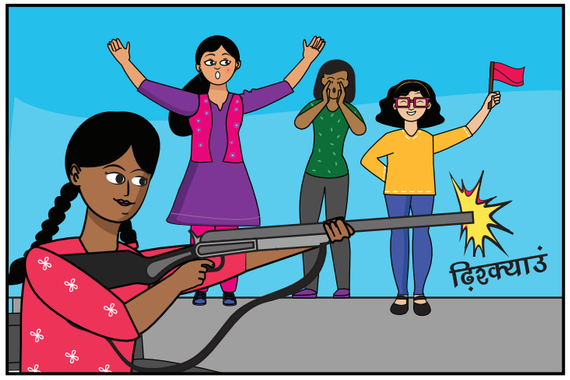

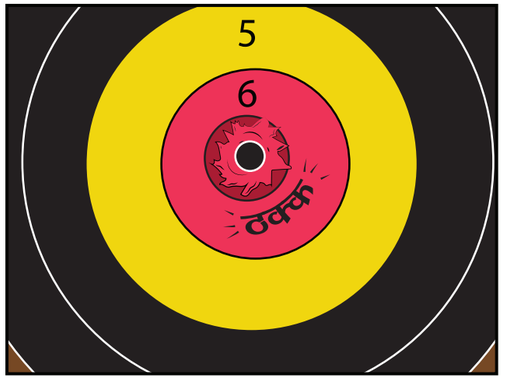

दोनों भाई-बहन प्रथम आते हैं और सब लोग उनके लिए ताली बजाते हैं।

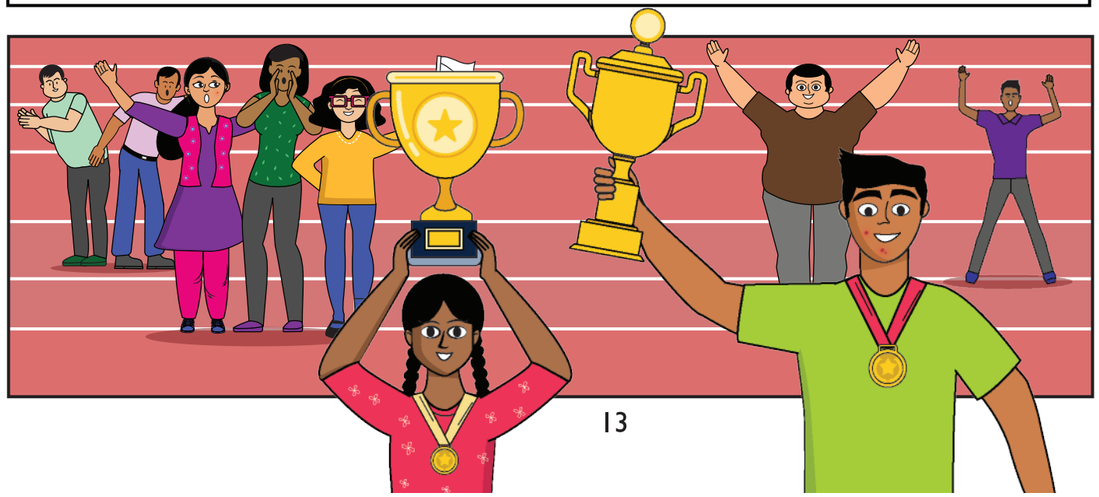

समाप्त

कहानी की सीख

इस कहानी से आपने क्या सीखा?

टीवी और विज्ञापनों में जिसे आदर्श रूप बताया जाता है,
उस आदर्श रूप के कारण हम उनकी तरह दिखने की कोशिश करते हैं,
जिससे हम दबाव महसूस करते हैं। उदाहरण के तौर पर लड़कियां
गोरी, पतली दिखने का दबाव महसूस करती हैं।
लड़कों पर गठीला दिखने का दबाव होता है।

जिसे आदर्श रूप कहा जाता है उसे पाने की कोशिश करना हानिकारक है।
आदर्श रूप को पाने के लिए हम पैसा, समय और मन की शांति व्यर्थ कर देते हैं।
जिसको हम अपने पसंदीदा कामों को करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

हमें अपने आप को अपने गुणों के लिए सराहना चाहिए।
हमें अपने आपको यह याद दिलाना चाहिए कि हम लोगों को
उनके गुणों के लिए पसंद करते हैं ना कि उनके
लुक्स यानि रंग-रूप के लिए।

अवश्य खेलें

थोड़ा सा समय निकाल कर सोचें कि इस कहानी से आपने क्या सीखा।

नीचे दी गयी लिस्ट से उन वाक्यों को चुनें जो दर्शाते हैं कि जिसे आदर्श रूप कहा जाता है उसे पाने का प्रयास करना हानिकारक है।

- लोकप्रियता बढ़ाना
- दूसरों के प्रति ईर्ष्या महसूस करना
- लोगों से बहुत प्यार मिलना
- दोस्तों के साथ समय ना बिता पाना
- मशहूर होना
- पत्रिकाओं को खरीदने में पैसे लगाना
- लुक्स को लेकर परेशान रहना
- लुक्स के लिए खाने पे ध्यान देना
- बालों को आकर्षक बनाने की बहुत सारी सामग्री खरीदना

इच्छा हो तो यह भी खेलें

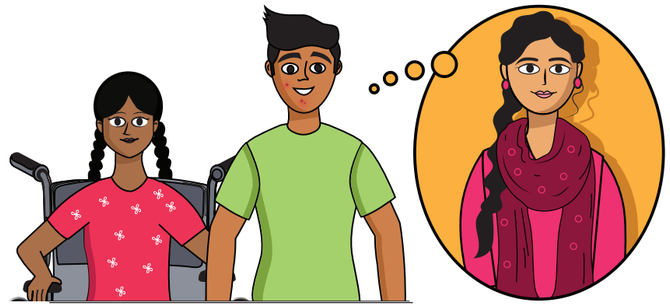

थोड़ा सा समय निकाल कर कहानी में दर्शायी गयी रोशनी मैम के बारे में सोचें कि वो पायल और अभय को क्यूं पसंद थीं?

उनके लुक्स की वजह से
'या'
गुणों की वजह से

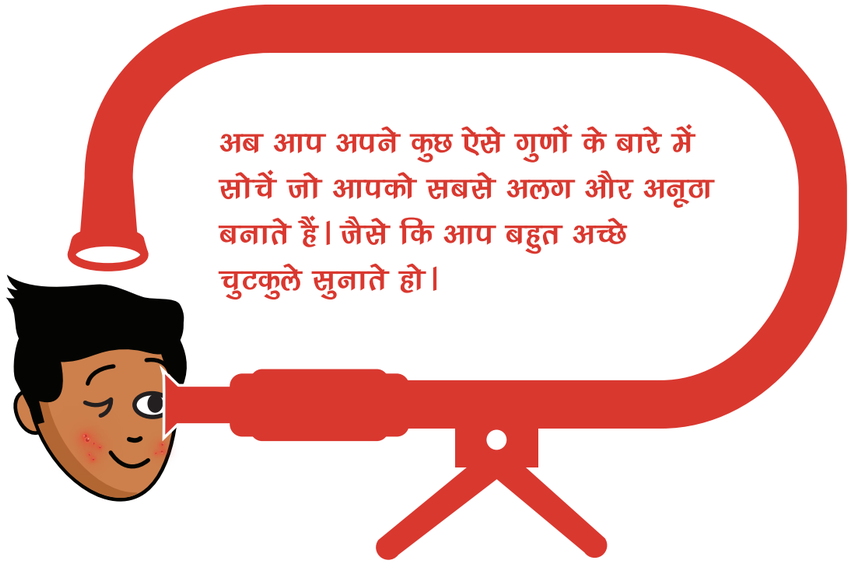

अब आप अपने कुछ ऐसे गुणों के बारे में सोचें जो आपको सबसे अलग और अनूठा बनाते हैं। जैसे कि आप बहुत अच्छे चुटकुले सुनाते हो।

अगली बार जब आप जिसे आदर्श रूप कहा जाता है, उसे पाने का दबाव महसूस करें तो अपने इन गुणों के बारे में सोचें और अपने आप को याद दिलायें कि गुणों का महत्व लुक्स से बहुत ज्यादा है।